" अहम तो तब भी था, जब मैं नही था "

अहम तो तब भी था, जब मैं न था अर्थात जब मैं (अहम) था ही नही तब भी इस विश्व में मैं (अहंकार) व्याप्त था या कहिए अहम (अहंकार) जब नही था तब भी कहीं तो मैं (अहंकार) भी था। कितनी असमंजस की स्तिथि है कि अहंकारी के न होने पर भी अहंकार का भाव तो अस्तित्व में था और सत्य भी यही है कि कोई भी अहंकारी तो जब ही होगा जब अहम भाव होगा किंतु यदि अहंकारी नही होगा तो अहंकार कहा और कैसे हो सकता है, फिर अहंकार पहले अस्तित्व में आया या अहंकारी? मुर्गी और अंडे जैसी बात हो गयी कि पहले मुर्गी अस्तित्व में आई या अंडा? आज भी विश्व में 80% से 95% व्यक्ति अहंकारी है फिर उनका अहंकार तो उनकी स्वयं की तो देन नही है क्योंकि अहम तो तब भी था जब मैं नही था। फिर उसके दोषी वो स्वयं कैसे हो सकते हैं। क्योंकि कहीं से तो उन्होने अहम भाव धारण किया होगा, व्यवहार में लाए होंगे और जिनसे धारण करके व्यवहार में लाए होंगे वो भी दोषी कैसे हो सकते हैं क्योंकि शायद अहम तो तब भी था जब वह नही था।

लेकिन अगर अहंकार को मूल मान लें, शाश्वत मान ले, सदा से स्वयं से अस्तित्व में आने वाला मान लें तब भी अकारण तो किसी की भी उत्पत्ति असंभव है क्योंकि कुछ न होने की दशा में किस से वह उत्पन्न हो सकता है और सृष्टि के निर्माण के समय तो यहाँ कुछ भी नही था। लेकिन अगर इसको अन्य अर्थों में समझा जाए तो अहम (स्वयं मैं) तो तब भी था जब मैं (अहम) न था और शायद ये अर्थ सबसे पहले अर्थ की तुलना में अधिक उपयुक्त है, और अब चूँकि ये इस प्रश्न पर दर्शन का सबसे उपयुक्त अर्थ है, इसलिए यही इस प्रश्न का उत्तर है। ख़ुशी की बात ये है कि मैं तो तब भी था, अब भी हूँ और मेरा मैं (अहम) शायद मेरा दामन छोड़ चुका है। अब मैं तो हू पर मेरा मैं (अहम) नही है और मैं मेरे मैं (अहम) से स्वतंत्र हूँ।

" अहम तो तब भी था, जब मैं नही था - मयंक सक्सैना "

Editing and Uploading by:
मयंक सक्सैना (Mayank Saxena) (Original Writer)
आगरा, उत्तर प्रदेश, भारत (AGRA, Uttar Pradesh, INDIA)

e-mail id: honeysaxena2012@gmail.com
facebook id: http://www.facebook.com/lovehoney2012
website/blog: http://authormayanksaxena.blogspot.in